A-0222

Total Pages : 4 **Roll No. .....**

MASL–504

M.A. SANSKRIT (MASL)

(नाटक एवं नाट्यशास्त्र भाग-01)

1st Semester Examination, Session December 2024

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :– यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 2×19=38

नोट :– खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. दशरूपक के अनुसार कार्यावस्थाओं का विस्तृत विवेचन कीजिए।

2. नाट्यशास्त्र के प्रणेता भरतमुनि का परिचय देते हुए नाट्यशास्त्र क प्रतिपाद्य विषय पर प्रकाश डालिए।

3. निम्नलिखित कारिका की व्याख्या कीजिए :

   अवस्थानुकृतिर्नाट्यं रूपं दृश्यतयोच्यते।

   रूपकं तत्समारोपात् दशधैव रसाश्रयम्॥

4. दशरूपक के अनुसार नायक का लक्षण प्रस्तुत करते हुए उसके भेदों का सविस्तार वर्णन कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

   (अ) रङ्गदैवतपूजन

   (ब) नाट्यशास्त्र की उत्पत्ति

   (स) आरभटी वृत्ति

खण्ड–ख

लघु उत्तरीय प्रश्न 4×8=32

नोट :– खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित कारिका की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामम्यो गीतमेव च।

यजुर्वेदादमिनयान् रसानाथर्वणादपि॥

वेदोपवेदैः सम्बद्धो नाट्यवेदोमहात्मना।

एवं भगवता सृष्टो ब्रह्मणा सर्ववेदिना॥

2. नाट्यशास्त्र के **दो** प्रमुख टीकाकारों का परिचय देते हुए उनके सिद्धान्तों को स्पष्ट कीजिए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

(अ) प्रगल्भा नायिका

(ब) प्रतिमुख सन्धि

(स) प्रतिनायक

4. आधिकारिक तथा प्रासङ्गिक कथावस्तु को विस्तार से समझाइए।

5. दशरूपककार की रसविषयक मान्यताओं को स्पष्ट कीजिए।

6. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए–

दुःखार्त्तानां श्रमार्त्तानां शोकार्त्तानां तपस्विनाम्।

विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति॥

धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्धनम्।

लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् भविष्यति॥

7. आचार्य धनिक धनञ्जय का परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का विश्लेषण कीजिए।

8. 'जर्जर' की उत्पत्ति का कारण बताते हुए उसकी महिमा का वर्णन कीजिए।

****